International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 57-60

हिंदी मुहावरेदार अभिव्यक्तियों का भाषिक अध्ययन

प्रितेंद्र कुमार मालाकार

शोधार्थी, प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में हिंदी भाषा की मुहावरेदार अभिव्यक्तियों (मुहावरों) का भाषिक अध्ययन किया गया है जिसके अंतर्गत मुहावरो की विभिन्न व्याकरणिक संरचनाओं, अर्थों एवं भावों को विश्लेषित तथा वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः हिंदी, मुहावरेदार अभिव्यक्तियां, संरचना, अर्थ, भाव।

1. प्रस्तावना

प्राकृतिक भाषाएं (छंजनतंस स्ंदहनंहमे) विभिन्न प्रकार की आंतरिक एवं अप्रत्यक्ष अभिव्यक्तियों (प्उचसपबपज – प्दकपतमबज म्ाचतमेपवदे) से परिपूर्ण एवं समृद्ध होती हैं जिनमें से मुहावरे (प्कपवउे) प्रमुख हैं। मुहावरों के प्रयोग से कोई भाषा और भी अधिक प्रभावशाली हो जाती है। इनके प्रयोग से भाषा में सहजता एवं स्वाभाविकता आती है। उपर्युक्त सभी विशेषताओं एवं गुणों के कारण दैनिक जीवन के वार्तालाप में मुहावरों का प्रयोग सतत रूप से बढ़ता ही जा रहा है। इसलिए प्रस्तुत शोध में मुहावरों का भाषिक अध्ययन किया गया है जिससे मुहावरों के विभिन्न संरचनाओं, अर्थों एवं भावों को समझने में सहायता मिल सके।

2. मुहावरेदार अभिव्यक्तियां

ऐसी अभिव्यक्तियां या वाक्यांश जिनका शाब्दिक या सामान्य अर्थ तो अलग होता है लेकिन इनका प्रयोग भिन्न भावार्थ प्रकट करने के लिए किया जाता है, मुहावरेदार अभिव्यक्तियां कहलाती हैं। मुहावरेदार अभिव्यक्तियों को मुहावरा भी कहा जाता है।

उदाहरण– "काठ का उल्लू" एक मुहावरा है जिसका शाब्दिक या सामान्य अर्थ "लकड़ी का उल्लू" है किंतु इसका प्रयोग किसी व्यक्ति को 'महामूर्ख' दर्शाने हेतु किया जाता है।

2.1. मुहावरों की उत्पत्ति

'मुहावरा' मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है 'अभ्यास होना'। यह एक संज्ञा (पुल्लिंग) शब्द है। इसे अरबी लिपि में 'मुहाविररू' लिखते हैं, जो हिंदी भाषा में 'मुहावरा' हो जाता है। 'मुहावरा' को अंग्रेजी
में 'Idiom' कहा जाता है। लेटिन और फ्रेंच से होता हुआ यह शब्द अंग्रेजी में आया है। साहित्य में इसके महाविरा, मुहाविरा, मुहावरा, महावुरा, महावरा तथा मुहावरा आदि कई रूप मिलते हैं। प्राचीन अर्थ के आधार पर मुहावरे से तात्पर्य था "आपस में बातचीत"। उर्दू–हिंदी शब्दकोश में मुहावरे के प्रचलित पर्याय में मुहर्रफ, मुहावरत तथा मुहावरात आदि शब्द मिलते हैं। उर्दू में इसे 'तर्ज़कलाम' तथा 'इस्तलाह' भी कहा जाता है। संस्कृत में मुहावरा शब्द के वाग्रीति, वाग्व्यापार, वाग्शरा, वाग्व्यवहार, विशिष्ट वचनं, विशिष्ट वाक्यं तथा भाषा–विशेषण आदि कई पर्याय मिलते हैं। वास्तव में आज के प्रचलित अर्थ में "मुहावरा" शब्द जिस निहित अर्थ का द्योतक है उस अर्थ का द्योतक कोई भी अन्य नहीं। इसके वास्तविक अर्थ का जो बोध 'मुहावरा' शब्द से होता है वह हिंदी के अन्य पर्याय 'वाग्धरा', 'भाषा–सम्प्रदाय' या 'वाक्–सम्प्रदाय' आदि प्रयोगों से नहीं हो पाता।

2.2. मुहावरों की विभिन्न परिभाषाएं

1. "लाक्षणिक या क्वचित् व्यंगार्थ में रूढ वाक्यांश मुहावरा होता है"।

   –वृहत् हिंदी शब्दकोश

2. "किसी भाषा में पायी जाने वाली असाधारण शब्द–योजना अथवा विलक्षण प्रयोग को मुहावरा कहते हैं"।

   –डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय

3. "मुहावरा भाषा–विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्ति की इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ि लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है"।

   –डॉ. भोलानाथ तिवारी

4. "जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को न बताकर, किसी विशेष अर्थ को बतलाता है और प्रायरू क्रिया का काम देता है, उसे वाग्धारा या मुहावरा कहते हैं"।

   –श्याम चंद्र कपूर

2.3. मुहावरों की विशेषताएं

मुहावरों की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्न हैंः

1. मुहावरा एक वाक्यांश होता है, इसलिए इसका प्रयोग केवल वाक्य के अंतर्गत ही किया जा सकता है।
2. मुहावरे के साथ जुड़े शब्द कभी बदले नहीं जाते हैं यद्यपि उनके क्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।
3. मुहावरे का सामान्य या शाब्दिक अर्थ विशेष महत्व का नहीं होता बल्कि उसके लक्ष्यार्थ पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
4. मुहावरे का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता बल्कि वाक्य में प्रसंग के अनुसार होता है एवं ये प्रसंग के अनुरूप अर्थ देते हैं।
5. मुहावरे समाज की रीति–रिवाजों और परंपराओं के निर्माण में सहायक होते हैं तथा इनका निर्माण देश, काल तथा समाज के विकास और परिवर्तन के अनुरूप होता रहता है।

2.4. महत्व एवं उपयोगिताए

किसी भी भाषा में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों का विशेष स्थान होता है जो न केवल भाषा के सौंदर्य एवं प्रभाव शक्ति को बढ़ाते है अपितु भाषा को रोचक, सहज एवं दृश्यात्मक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए आज मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे– सोशल मीडिया, अध्ययन, लेखन, वार्ता, साक्षात्कार, भाषण, वार्तालाप आदि सभी में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है क्योंकि ये वक्ता के विचार में अतिरिक्त संचार शक्ति प्रदान करते हैं तथा लोगों का ध्यान किसी विशेष विषय की ओर आकृष्ट कराने में सहायक होते हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा और अधिक प्रभावशाली हो जाती है।

3. मुहावरों का संकलन

हिंदी के मुहावरेदार अभिव्यक्तियों के भाषिक अध्ययन हेतु विभिन्न कोशों का संदर्भ लेते हुए कुल 8000 मुहावरों का संकलन किया गया हैरू

4. मुहावरों का भाषिक अध्ययन

हिंदी के संकलित मुहावरों का विभिन्न भाषिक सिद्धांतों के आधार पर विश्लेषण किया गया है जिससे मुहावरों के प्रदर्शन एवं सामान्यीकरण में सरलता हो।

4.1. मुहावरों का विश्लेषण

मुहावरों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है किरू

1. हिंदी के अधिकांश मुहावरे शरीर से विभिन्न अंगों (जैसे– आंख, नाक, कमर, सीना, पैर, हाथ, गर्दन आदि) से संबंधित हैं।

उदाहरण– आंख का अंधा, नाक कटाना, कमर कसना, पैर पटकना, हाथ उठाना, गर्दन झुकना आदि।

2. कई मुहावरे विभिन्न पशु–पक्षी तथा जंतुओं पर आधारित हैं।

उदाहरण– गधा बनाना, बैल की तरह जुतना, बाज की तरह झपटना, कीड़ा बनना आदि।

3. कुछ मुहावरे ऐसे भी हैं जो दैनिक जीवन के रिश्तों या संबंधों (बाप, दादा, मामा, चाचा आदि) से बने हुए हैं।

उदाहरण– बाप निकलना, मामा बनाना, मौसी का घर होना आदि।

4. किसी देवता, प्रसिद्ध व्यक्ति, स्थान तथा पदार्थ के नाम पर भी मुहावरे प्राप्त हुए हैं।

उदाहरण– इंद्र का वज्र, हनुमान की गदा, गांधी के रास्ते पर चलना, हिटलरशाही, नर्क में जाना, मिट्टी में मिलना, लोहा लेना आदि।

5. संख्याओं से भी कुछ मुहावरे निर्मित हुए हैं।

उदाहरण– एक–और–एक ग्यारह होना, नौ–दो ग्यारह होना, तीन–तेरह करना, चार–सौ–बीसी करना, आठ–आठ आंसू रोना, दस घाट का पानी पीना आदि।

6. शब्दों की पुनरावृत्ति से भी कुछ मुहावरे निर्मित हुए हैं।

उदाहरण– थू–थू करना, थोड़ा–थोड़ा करना आदि।

7. हिन्दी के एक शब्द के साथ उर्दू के दूसरे शब्द के योग से बने मुहावरे भी हैं।

उदाहरण– मेल मुहब्बत होना, मेल–मुलाकात रखना, दिशा–मैदान जाना आदि।

8. अलंकारों के प्रयोग से से बने मुहावरे भी हैं। अनेक मुहावरे में अलंकारों का प्रयोग हुआ रहता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रत्येक मुहावरा अलंकार होता है अथवा प्रत्येक अलंकारयुक्त वाक्यांश मुहावरा होता है। नीचे कुछ मुहावरे दिए जाते हैं जिनमें अलंकारों का प्रयोग हुआ है रू

उदाहरण– लाल अंगारा होना, अंगार बरसाना आदि।

9. कथानकों, धर्म–कथाओं आदि पर आधारित मुहावरे भी हैं।

उदाहरण– बीड़ा उठाना, टेढ़ी खीर होना, ढपोरशंख होना, सोने का मृग होना, बीरबल की खिचड़ी पकाना, आदि।

10. व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का जातिवाचक संज्ञाओं की भांति प्रयोग से बने मुहावरे भी हैं।

उदाहरण– कुंभकरण की नींद, द्रौपदी का चीर, जयचंद होना, युधिष्ठिर बनना, विभीषण होना, हरिश्चन्द्र बनना, आदि।

11. ध्वनियों पर आधारित मुहावरे भी हैं।

उदाहरण– वाह–वाह करना, सी–सी करना, हाय–हाय मचाना, टर–टर करना, भों–भों करनौं।

12. शारीरिक चेष्टाओं के आधार पर बने हुए मुहावरे भी हैं। शारीरिक चेष्टाएं मनोभाव प्रकट करती हैं और उनके आधार पर कुछ मुहावरे बनते हैं।

उदाहरण– छाती पीटना, दांत पीसना, पूंछ हिलाना, आदि।

4.2. व्याकरणिक संरचना

प्रत्येक मुहावरे की एक व्याकरणिक संरचना होती है। व्याकरणिक संरचना के अनुसार ही मुहावरों का निर्माण या सृजन होता है। मुहावरों का अध्ययन, विश्लेषण, वर्गीकरण एवं वाक्यों में प्रयोग करते समय उनकी संरचनाओं का बोध होना आवश्यक है। किसी मुहावरे की व्याकरणिक संरचना में शब्द–भेद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया–विशेषण, परसर्ग आदि) एक निर्धारित क्रम में व्यवस्थित होते हैं। कभी–कभी वक्ताओं के द्वारा वाक्य में प्रयोग करते समय मुहावरे की संरचना (शब्द–क्रम) को आवश्यकतानुसार परिवर्तित भी कर लिया जाता है, किंतु यह मुहावरे की मूल संरचना से ही प्रेरित अथवा बद्ध होती है। मुहावरों की कुछ प्रमुख भाषिक संरचनाओं निम्न हैंः

1. <संज्ञा> से

कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो केवल एक संज्ञा से निर्मित हुए हैं।
उदाहरण– उल्लू, गधा, शेर।

2. <क्रिया> से

कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो केवल एक क्रिया से निर्मित हुए हैं।
उदाहरण– चटाना, मिमियाना।

3. <विशेषण> से

कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो केवल एक विशेषण से बने हैं।
उदाहरण– मक्खीचूस, जंगलराज, अंधेरगर्दी, अंधेरनगरी, रामराज।

4. <संज्ञा>+<क्रिया> के प्रयोग से

कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो संज्ञा के साथ क्रिया मिलने से निर्मित हुए हैं

उदाहरण– टांग खींचना, सिर पकड़ना, माथा पकड़ना।

5. <क्रिया>+<क्रिया> के संयोजन से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो क्रिया के क्रिया के संयोजन से बनते हैं।
उदाहरण– उठना–बैठना, खाना–पीना।

6. <विशेषण>+<क्रिया> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो विशेषण के साथ क्रिया मिलने से निर्मित हुए हैं
उदाहरण– अंधा बनाना, मूर्ख बनाना।

7. <सर्वनाम>+<क्रिया> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो सर्वनाम के साथ क्रिया मिलने से निर्मित हुए हैं
उदाहरण– अपना बनाना, पराया करना।

8. <विशेषण>+<संज्ञा> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो विशेषण के साथ संज्ञा मिलने से निर्मित हुए हैं। मुहावरों में अद्वितीयता की प्रविष्टि एवं अनूठेपन के संयोजन के लिए विशेषणों का भी प्रयोग किया जाता है।
उदाहरण– अंधा कुआं, किताबी कीड़ा, कड़ा कलेजा।

9. <संज्ञा>+<परसर्ग>+<संज्ञा> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो संज्ञा के साथ परसर्ग (का, के, की, ने, से, आदि) तत्पश्चात एक और संज्ञा मिलने से बनते हैं।
उदाहरण– काठ का उल्लू, आंख का तारा।

10. <संज्ञा>+<परसर्ग>+<विशेषण> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो संज्ञा के साथ परसर्ग (का, के, की, ने, से) तत्पश्चात विशेषण मिलने से निर्मित हुए हैं
उदाहरण– आंख का अंधा, जबान का पक्का।

11. <विशेषण>+<संज्ञा>+<क्रिया> के योग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो विशेषण के साथ संज्ञा तत्पश्चात क्रिया मिलने से निर्मित हुए हैं।
उदाहरण– उल्टी गंगा बहाना, उल्टी माला फेरना।

12. <संज्ञा>+<विशेषण>+<क्रिया> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो संज्ञा के साथ विशेषण तत्पश्चात क्रिया मिलने से निर्मित हुए हैं।
उदाहरण– उल्लू सीधा करना, खून सफ़ेद होना।

13. <विशेषण>+<परसर्ग>+<संज्ञा>+<संज्ञा> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो विशेषण के साथ परसर्ग (का, के, की, ने, से, आदि) फिर संज्ञा तत्पश्चात एक और संज्ञा मिलने से निर्मित हुए हैं।
उदाहरण– अंधे के हाथ बटेर, अंधे के हाथ आईना।

14. <विशेषण>+<परसगZ>+<विशेषण>+<संज्ञा> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो विशेषण के साथ परसर्ग (का, के, की, ने, से, आदि) तत्पश्चात विशेषण फिर संज्ञा मिलने से निर्मित हुए हैं।
उदाहरण– अंधो में काना राजा।

15. <विशेषण>+<संज्ञा>+<विशेषण>+<संज्ञा> के प्रयोग से
कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो क्रमशरू विशेषण,संज्ञा,विशेषण, संज्ञा से निर्मित हुए हैं।
उदाहरण– ऊंची दुकान फीका पकवान।

4.3. मुहावरों का अर्थीय विश्लेषण

A. **अनेकार्थकता**
किसी भी मुहावरे के दो अर्थ होते हैंः
(1) शाब्दिक अर्थ
(2) लक्ष्यार्थ

1. शाब्दिक अर्थ
शाब्दिक अर्थ से अभिप्राय है मुहावरों का सामान्य अर्थ। मुहावरों के अंतर्गत प्रयुक्त शब्दों का अर्थ ही मुहावरों का शाब्दिक अर्थ कहलाता है। इसे मुख्यार्थ या प्रत्यार्थ भी कहा जाता है।
उदाहरण– "काठ का उल्लू" एक मुहावरा है जिसका शाब्दिक या सामान्य अर्थ "लकड़ी का उल्लू" है।

2. लक्ष्यार्थ
मुहावरों का प्रयोग जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है, उसे लक्ष्यार्थ कहा जाता है। इसे व्यंग्यार्थ भी कहा जाता है।
उदाहरण– "काठ का उल्लू" एक मुहावरा है प्रयोग किसी व्यक्ति को 'महामूर्ख' दर्शाने हेतु किया जाता है।

(1). कुछ ऐसे मुहावरे भी हैं जिनका प्रयोग शाब्दिक एवं लक्ष्य दोनों प्रकार के अर्थों में किया जाता है, जैसेः

i. अंडे सेना
शाब्दिक अर्थ– पक्षियों का अपने अंडों पर बैठना, बैठकर गर्मी प्रदान करना आदि।
लक्ष्यार्थ –घर में बैठे रहना, बाहर न निकलना, काम न करना आदि।

ii. आग लगाना
शाब्दिक अर्थ – किसी वस्तु को जलाना।
लक्ष्यार्थ – किसी व्यक्ति को भड़काना, झगड़ा लगाना आदि।

iii. मरम्मत करना
शाब्दिक अर्थ– बिगड़ी वस्तु को ठीक करना, सुधार करना।
लक्ष्यार्थ –किसी व्यक्ति को मारना आदि।

iv. बोझ उठाना
शाब्दिक अर्थ– किसी भारी वस्तु को सिर पर लेना।
लक्ष्यार्थ –उत्तरदायित्व लेना।

B. **समानांतरता**
कई मुहावरे अर्थ एवं भाव की दृष्टि से समान होते हैं। मुहावरों के इस गुण या विशेषता को समानांतरता कहा जाता है।
उदाहरणः जानबूझकर मृत्यु के निकट जाना =
कफ़न सिर से बांधना
कफ़न बांधे फिरना
मौत को दावत देना
कफ़न लपेटना
मौत को गले लगाना
यमराज को ललकारना
मौत के मुंह में जाना
मौत को बुलाना
उपर्युक्त सभी मुहावरों का समान (अर्थ एवं भाव की दृष्टि से) समान अर्थ है।

5. निष्कर्ष

हिंदी मुहावरों की रुपिमिक विशेषता, मुक्त शब्दक्रम एवं विभिन्न संरचना उनके भाव–विश्लेषण को और अधिक जटिल बनाती है इसलिए इस शोधकार्य से हिंदी मुहावरेदार अभिव्यक्तियों के भाव–विश्लेषण में सहायता मिलेगी।

6. संदर्भ–सूची (References)

1. पाण्डेय, पृथ्वीनाथ. मानक सामान्य हिंदी. अरिहंत पब्लिकेशंस।
2. पचौरी, पुनीता. (2006). मुहावरेरू आर्थी संरचना एवं मनोभाषिकता. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (उ. प्र)।
3. गुप्त, ओमप्रकाश. (1881). मुहावरा मीमांसा. बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद (पटना)।
4. ओझा, त्रिभुवन. (1994). हिंदी में अनेकार्थकता का अनुशीलन. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. तरुण, हरिवंश. (2009). मानक हिंदी मुहावरा लोकोक्ति कोश. प्रकाशन संस्थान।
6. सिंह, राजवीर. (2012). सरस्वती मुहावरा कोश. सरस्वती विहार।